Vol 2 Issue 9 March 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 9, March. 2013
ISSN:-2231-5063 Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन

आत्म प्रकाश शर्मा , विभा निगम

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी), आगरा।
संकाय प्रमुख, डिपार्टमेंट ऑफ पैडागॉजिकल साइंसेज, शिक्षा संकाय, दयालबाग
एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), आगरा।

सारांशः

इस अध्ययन का उद्देश्य अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं को जानना था, ताकि प्राप्त परिणामों के आधार पर अनाथालयी बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु उचित शिक्षा के संदर्भ में सही निर्देशन व परामर्श प्रदान कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। शोध न्यादर्श हेतु उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक विधि द्वारा आगरा व मथुरा जिले के 04 अनाथालयों में निवासित 70 (40 लड़के व 30 लड़कियों) किशोरवय बालकों का चयन किया गया। अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं के मापन हेतु बी. एम.दीक्षित व डी.एन. श्रीवास्तव (1987) द्वारा निर्मित रिएक्शन टू फ्रस्ट्रेशन स्केल (Reaction to Frustration Scale) का प्रयोग किया गया व प्राप्त परिणामों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमानों की सार्थकता परीक्षण हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अनाथालयी बालक–बालिकायें विभिन्न प्रकार की उच्च भग्नाशाओं से ग्रसित हैं।

प्रस्तावना :–

समस्या कथन

अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन

भग्नाशा व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है इसके उत्पन्न होने के विविध स्रोत हैं। कुछ विशिष्ट स्थितियाँ भग्नाशा को अन्तहीन बनाती हैं, जिन्हें मुख्य रूप से तीन वर्गों में रखा जाता है 1. भौतिक वातावरण, 2. मानवीय जैविकीय सीमाएँ एवं, 3. मनोवैज्ञानिक कारक आदि।
(दीक्षित एवं श्रीवास्तव, 1987)

स्ट्रेंगर (1961) के अनुसार, "भग्नाशा भावनात्मक तनाव की अवस्था है, जो उलझन, चिड़चिड़ाना और क्रोध के रूप में प्रकट होती है। लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास में रूकावट का कारण भग्नाशा है"। वहीं फ्रायड ने आक्रामकता को भग्नाशा की अभिव्यक्ति बताया है। उनके अनुसार भग्नाशा तब उत्पन्न होती है जब खुशी खोजने या दर्द से बचने का व्यवहार बाधित होता है। असफल होने का भय इस प्रकार के व्यवहार को उत्पन्न करता है।

बार्कर, डेम्बो तथा लेविन (1952) के अनुसार अग्रिम 'भग्नाशा–प्रतिगमन' परिकल्पना यह प्रदर्षित करती है कि एक गतिविधि की भग्नाशा दूसरी गतिविधि में कार्य की गुणवत्ता को घटा देती है। यह वर्तमान में प्रतिक्रियाओं के निर्माण की ओर ले जाती है, जो दूसरी गतिविधि की प्रतिक्रिया में परस्पर दखल देती है। (बार्कर एट.ऑल., 1941)

औचित्य

भग्नाशा वैसे तो किसी भी बालक में पाई जा सकती है परन्तु एक अनाथ बालक के लिए तो यह समस्या अत्यन्त विकराल है क्योंकि वह स्वयं को विभिन्न समस्याओं गृह–रहित, परिवार व समाज से परित्यक्त, अनिश्चितताओं से भरा जीवन, अंधकारमय भविष्य, भावनात्मक लगाव का अभाव आदि से घिरा पाता है। परिणामस्वरूप वह इन समस्याओं को अपने भाग्य का दोष मानकर जीवन में समायोजन करने का निरन्तर प्रयास करता रहता है और वह भग्नाशा से ग्रसित हो जाता है जो उसके व्यवहार में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। इसकी पुष्टि भारत एवं विश्व में किये गये विभिन्न शोधों से होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनाथ व परिवार से विरक्त बालकों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए नियुक्त बाउले (1951) ने उक्त बालकों की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उजागर किया। बाउले ने इन बालकों की समायोजन समस्याओं और भग्नाशा की स्थिति पर भी प्रकाश डाला और स्थिति को अत्यन्त चिंताजनक बताया। परिणामस्वरूप डब्ल्यू.एच.ओ. ने इस समस्या के अध्ययन में और प्रगति की और 1953 से 1956 तक जिनेवा में बालक के मनोवैज्ञानिक विकास पर अध्ययन समूह संगठित किये जिसके द्वारा माता–पिता के प्यार से वंचित बालकों की समस्याओं पर विचार–विमर्श किया गया। जिसमें इरिक इरिक्सन के

Title :अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] आत्म प्रकाश शर्मा , विभा निगम yr:2013 vol:2 iss:9

प्रोफेसर जूलिया एस. हक्सले, मार्गेटेट मेड, प्रो. जीन पियाजे, डॉ. जॉन बाउले, डॉ. के.जेड. लॉरेन्ज, बारबिल इनहेल्डर आदि श्रेष्ठ विद्वानों, शोधार्थियों और कार्यकर्ताओं के समूहों ने भिन्न–भिन्न वर्षों में अध्ययन किये और अध्ययनों के परिणामों को भिन्न–भिन्न वर्षों में प्रकाशित किया गया।

गरीबी, अशिक्षा और कम संसाधनों के कारण भारत जैसे विकासशील देश उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। यूनिसेफ आँकड़ों के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। भारत में 2 करोड़ 50 लाख से अधिक बालक अनाथ हैं वहीं लगभग 8 करोड़ चालीस लाख बच्चे त्यागें हुए और अनाथ हैं। लगभग 3 करोड़ 40 लाख महिलायें विधवा हैं। (2001 की जनगणना के अनुसार)

अनाथपन के कारण

अनाथपन के दो कारक प्रमुख हैं, जो निम्नवत् हैं–

प्राकृतिक कारक	मानवीय कारक
• माता–पिता की प्राकृतिक मृत्यु होना। • बाढ़, सुनामी, भूकम्प, महामारी फैलना। • एच.आई.वी., गरीबी आदि।	• युद्ध, रेल, सड़क, हवाई दुर्घटना • अपहरण, आतंकवाद • आत्म हत्या आदि।

अनाथपन का कारण चाहे कोई भी हो हर स्थिति में बालक को एक समान समस्याओं का सामना करना पड़ता है, और वह अनेकों प्रकार से अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं, अभिप्रेरणाओं, आवश्यकताओं को दबाते हुए समायोजन हेतु निरन्तर प्रयासरत रहता है। ऐसी स्थिति में बालक का व्यवहार अप्रत्याशित रूप प्राप्त करता है और उसके व्यवहार में विभिन्न प्रकार की भग्नाशा प्रतिक्रियायें (Frustration reactions) प्रदर्शित होने लगती हैं। अतः यह जानने के लिए कि अनाथालयी बालकों में भग्नाशा प्रतिक्रियायें किस प्रकार की हैं और लिंग भेदानुसार इनमें क्या अन्तर है यह जानने के लिए शोधार्थी द्वारा इस विषय का चयन किया गया।

सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के आगरा व मथुरा जिले में स्थित 04 (02 सरकारी व 02 गैर सरकारी) अनाथालयों में रहने वाले 70 (40 लड़कों व 30 लड़कियों) किशोरवय बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया गया।

शोध विधि :

अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधि :

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन तथा सी.आर. परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसकी गणना स्टेटिस्टिका–5 सॉफ्टवेयर द्वारा कम्प्यूटर की सहायता से की गयी।

न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के आगरा व मथुरा जिले में स्थित 04 अनाथालयों में निवासित 70 (40 लड़के व 30 लड़कियों) किशोरवय बालकों का चयन किया गया है।

उपकरण

अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का मापन करने हेतु बी.एम.दीक्षित द्वारा निर्मित 'रिएक्शन टू फ्रस्ट्रेशन स्केल' का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण

अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन ।

अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए भग्नाशा के आयामानुसार प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन प्राप्त किया गया जो इस प्रकार है–

सारणी सं. 1
अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रिया के मध्यमान व मानक विचलन

सांख्यिकी / आयाम	मध्यमान	मानक विचलन	भग्नाशा प्रतिक्रिया स्तर
आक्रामकता	25.98	2.12	उच्च आक्रामकता
परित्याग	32.83	3.63	अति उच्च परित्याग
निर्धारीकरण	31.78	1.78	उच्च निर्धारीकरण
प्रतिगमन	31.87	2.65	उच्च प्रतिगमन

सारणी सं. 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रिया के विभिन्न आयामों क्रमशः आक्रामकता, परित्याग, निर्धारीकरण व प्रतिगमन के सन्दर्भ में प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 25.98, 32.83, 31.78 व 31.87 व मानक विचलन 2.12, 3.63, 1.78 व 2.65 प्राप्त हुए, जो बालकों में भग्नाशा के चारों आयामों में उच्च भग्नाशा प्रतिक्रियायें प्रदर्षित कर रहे हैं। बालकों में परित्याग की भावना सर्वाधिक, प्रतिगमन द्वितीय स्थान पर, निर्धारीकरण तृतीय स्थान पर व आक्रामकता चतुर्थ स्थान पर पायी गयी।

अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रिया स्तर के अनुसार भग्नाशा प्रतिक्रियायें

परिणामों के विस्तृत विवेचन के लिए अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का उपकरण में दर्शाये गये स्तरों के अनुसार प्राप्त परिणाम सारणी सं. 2 में प्रस्तुत हैं।

सारणी सं. 2
आक्रामकता के विभिन्न आयामों के सन्दर्भ में भग्नाशा प्रतिक्रियायें प्रदर्षित करने वाले बालकों का प्रतिशत

भग्नाशा प्रतिक्रिया स्तर	आक्रामकता	परित्याग	निर्धारीकरण	प्रतिगमन	सम्पूर्ण
अति उच्च भग्नाशा	18.57%	82.86%	25.71%	21.43%	28.57%
उच्च भग्नाशा	57.14%	10.00%	65.71%	31.43%	38.57%
सामान्य भग्नाशा	24.29%	7.14%	8.57%	47.14%	32.86%

सारणी सं. 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 24.29: बालक सामान्य, 57.14: बालक उच्च व 18.57: बालक अति उच्च आक्रामकता प्रदर्शित कर रहे हैं। परित्याग के सन्दर्भ में 7.14: बालक सामान्य, 10: उच्च व 82.86: बालक अति उच्च परित्याग की भावना प्रदर्षित कर रहे हैं। निर्धारीकरण के सन्दर्भ में 8.57: बालक सामान्य, 65.71: बालक उच्च व 25.71: बालक अति उच्च निर्धारीकरण प्रदर्शित कर रहे हैं। प्रतिगमन के सन्दर्भ में 47.14: बालक सामान्य, 31.43: बालक उच्च व 21.43: बालक अति उच्च प्रतिगमन प्रदर्षित कर रहे हैं। सम्पूर्ण अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि 32.86: बालक सामान्य, 38.57: उच्च व 28.57: बालक अति उच्च भग्नाशा प्रतिक्रियायें प्रदर्षित कर रहे हैं।

लिंग भेदानुसार अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रिया का अध्ययन ।

उपर्युक्त विश्लेषण से अनाथालयी बालक विभिन्न प्रकार की भग्नाशाओं से ग्रसित पाये गये अतः बालक व बालिकाओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं को अलग–अलग जानना आवश्यक प्रतीत हुआ कि भग्नाशा किसमें ज्यादा होती है? यह जानने के लिए अंकड़ों का लिंगभेदानुसार अध्ययन किया गया। और बालक व बालिकाओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं के मध्य अन्तर को मापने के लिए सी.आर. परीक्षण का प्रयोग किया गया जो इस प्रकार है–

सारणी सं. 3
लिंग भेदानुसार अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का मध्यमान, मानक विचलन व सी.आर.–मान

सांख्यिकी / आयाम	अनाथालयी बालक (N=40)		अनाथालयी बालिकायें (N=30)		स्वतन्त्रता अंश	'सी.आर' मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
आक्रामकता	26.37	2.42	25.6	1.72	68	1.54	>.05
परित्याग	34.34	2.26	33.32	2.31	68	1.85	>.05
निर्धारीकरण	32.06	1.679	31.52	1.86	68	1.28	>.05
प्रतिगमन	30.92	2.356	31.83	2.62	68	1.52	>.05
सम्पूर्ण	123.69	4.44	122.1	5.12	68	1.95	>.05

सारणी संख्या 3 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि लिंग भेदानुसार अनाथालयी बालकों एवं बालिकाओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं में विभिन्न आयामों के अनुरूप बहुत कम अन्तर है। जिसमें बालकों व बालिकाओं के आक्रामकता प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 26.37 व 25.6 एवं मानक विचलन क्रमशः 1.42 व 1.72 प्राप्त हुए हैं तथा दोनों समूहों के मध्य सी.आर. मान 1.54 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर पर स्वतन्त्रता अंश 68 के लिए असार्थक है।

बालकों के परित्याग के संदर्भ में प्राप्त परिणामों के मध्यमान क्रमशः 34.34 व 33.32 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.26 व 2.31 प्राप्त तथा दोनों समूहों के मध्य सी.आर.–मान 1.85 प्राप्त हुआ जो स्वतन्त्रता अंश 68 पर असार्थक है।

बालकों के निर्धारीकरण के सम्बन्ध में प्राप्त परिणामों के मध्यमान क्रमशः 32.06 व 31.52 तथा मानक विचलन का मान क्रमशः 1.679 व 1.86 तथा दोनों समूहों के मध्य सी.आर. मान 1.28 प्राप्त हुआ जो स्वतन्त्रता अंश 68 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है।

प्रतिगमन के संदर्भ में बालक व बालिकाओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 30.92 व 31.83 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.356 व 2.62 तथा टी–मान 1.52 प्राप्त हुआ स्वतन्त्रता अंश 68 पर .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है।

अतः इस सन्दर्भ में निर्मित शून्य परिकल्पना, "लिंग भेदानुसार अनाथालयी बालकों व बालिकाओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" स्वीकृत की जाती है।

अतः लिंग भेदानुसार अनाथालयी बालक व बालिकाओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं के मान लगभग समान ही हैं क्योंकि सभी बालक परिवार व माता–पिता के लाड़–प्यार से वंचित अनाथालयों में निवास कर रहे हैं और दोनों की ही परिस्थितियाँ व समस्यायें लगभग एक समान हैं, हालांकि अनाथालय बालकों के समुचित विकास के लिए भरसक प्रयासरत हैं, परन्तु फिर भी वे सामान्य बालकों के समान सुविधायें व लाड़–प्यार नहीं दे पा रहे हैं। अतः अनाथालयी बालक–बालिकाओं में भग्नाशा प्रतिक्रियायें समान रूप से पायी जाती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में जो उपलब्धियाँ एवं निष्कर्ष प्राप्त किये वह इस प्रकार हैं–

1.अनाथालयी बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियायें विभिन्न आयामों क्रमशः आक्रामकता, परित्याग, निर्धारीकरण व प्रतिगमन के सन्दर्भ में उच्च पायी गयीं, बालकों में परित्याग की भावना सर्वाधिक, प्रतिगमन द्वितीय स्थान पर, निर्धारीकरण तृतीय स्थान पर व आक्रामकता चतुर्थ स्थान पर पायी गयी।

2.बालकों की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने पर विदित होता है कि 57.14ः बालकों में उच्च आक्रामकता, 82.86ः बालकों में अति उच्च परित्याग, 65.71ः बालकों में उच्च निर्धारीकरण तथा 47.14ः बालकों में प्रतिगमन सामान्य भग्नाशा प्रतिक्रिया के रूप में प्रदर्शित हो रहे हैं। सम्पूर्ण अवलोकन करने पर 32.86ः बालक सामान्य, 38.57ः उच्च व 28.57ः बालक अति उच्च भग्नाशा प्रतिक्रियायें प्रदर्षित कर रहे हैं।

3.भग्नाशा प्रतिक्रियाओं का लिंग भेदानुसार अध्ययन करने पर बालकों व बालिकाओं के विभिन्न भग्नाशा प्रतिक्रियाओं के प्राप्तांक आक्रामकता, परित्याग, निर्धारीकरण व प्रतिगमन के सन्दर्भ में लगभग समान पाये गये और दोनों के मध्य अन्तर ज्ञात करने के लिए प्राप्त सी.आर मान .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक पाये गये। अर्थात् बालक व बालिकाओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बार्कर, आर.जी. डेम्बो, टी. एण्ड लेविन, के. (1941). "फ्रस्ट्रेशन एण्ड रिग्रेशन एन एक्सपेरिमेंट विद यूथ चिल्ड्रेन", स्टडीज इन टोपोलॉजिकल एण्ड वेक्टर साइकोलॉजी, II. यूनिवर्सिटी ऑफ आईवा स्टडीज इन चाइल्ड वेलफेयर.

धूमल, एस.एस. एण्ड देशपाण्डेय, सी.जी. (1988). द साइकोलॉजिकल स्टडी ऑफ इन्टीट्यूसनलाइज्ड डेस्टीट्यूट गर्ल्स ऑफ (16.25) ईयर्स, पुणे : यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे.

फिलर, आर.जे. (1952). "फ्रस्ट्रेशन, सेटिसफेक्शन एण्ड अदर फेक्टर्स अफेक्टिंग द अटरेक्टिवनेस ऑफ गोल ऑब्जेक्टस", जे.एब्नोर्म सोस. साइको. 47, 202–212.

फ्रायड, एस. (1933). "न्यू इन्ट्रोडक्टरी लेक्चर्स ऑन साइको–एनालसिस, न्यूयार्क नॉर्टन.

गुप्ता एस.पी. (2008). "सांख्यिकीय विधियाँ", शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

ज्ञानानी, टी.सी. एवं सक्सैना, एस. (2004). 'फ्रस्ट्रेशन रिएक्शन पैटर्न एज अ फंक्शन ऑफ जेण्डर, कॉग्नेटिव स्टाईल एण्ड कन्फर्मिटी एट डिफरेंट एज लेवल्स, बिहेबिअरल साइंटिस्ट 2004, 5(1) Pg. 59.64.

नागर, दिव्या (1992). "अ स्टडी ऑफ सोसियो–साइकोलॉजिकल प्रॉब्लम्स एण्ड पर्सनेलिटी वेरियेबल्स ऑफ द डिप्राइव्ड चिल्ड्रन लिविंग इन द डेस्टिट्यूड होम्स ऑफ राजस्थान". पी–एच.डी. थीसिस, मोहन लाल सुखदिया यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.)

नाटसन, एच. (1995). ए स्टडी ऑन द पर्सनालिटी एण्ड बिहेवरल प्राब्लम्स ऑफ डिप्राइब्ड चिल्ड्रेन्स : इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 8;2).

ओन्हुआ, एफ.एन. (2008). "नैगेटिव मैन्टल हैल्थ फैक्टर्स इन चिल्ड्रन ऑर्फन्ड वाइ एड्सः नेशनल मेन्टर्निंग एज अ पलेटिव केयर" स्प्रिंजर साइंस एण्ड बिजनेस मीडिया, एलएलसी.

पटनाइक, एम.एस. (2000). "एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन". इण्डियन पब्लिसर्स, न्यू देहली, वॉ. 2.

पॉल, ओ. (2004). "सोशल एडजस्टमेंट ऑफ कीनियन ऑर्फन्ड ग्राण्डचिल्ड्रेन, परसीव्ड केयरगिविंग स्ट्रैस एण्ड डिसिप्लेन स्ट्रैटजीस यूज्ड वाइ देयर फास्टरिंग ग्राण्डमदर्स", मिसिनो यूनिवर्सिटी, केन्या.

सिंह, पी. (1992). "अ स्टडी ऑफ एडजस्टमेण्ट, एग्रेसिवनैस, एचीवमेंट, मोटिवेशन एण्ड सैल्फ कान्सेप्ट आफ फिजीकली हैण्डीकैप्ड स्टूडेण्ट्स एज कम्पेयर्ड टू नॉर्मल स्टूडेण्ट्स", पी–एच.डी. (शिक्षा) सौरास्ट्र यूनिवर्सिटी, ट सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च वो. ष्पृ.सं. 1562.

सुमन, एस.के. (1986). "द मैण्टल हैल्थ स्टेट्स ऑफ चिल्ड्रन इन ऑर्फनेज्स एट बैंगलौर", प्रिंसिस ईसेन वोमैन्स एजूकेशन सेन्टर", हैदराबाद.

वेदी, एम.एस. (1978). "सोसली हैण्डिकेप्ड चिल्ड्रन : अ स्टडी ऑफ देयर इन्टीट्यूसनल सर्वेज्" स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, सिकागो.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net